



नवसर्जन संस्कृति

PRGI No. GJHIN/25/A2786

नवसर्जन संस्कृति

PUBLISHED HIINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 01

अंक : 256

दि. 19.06.2026,

शुक्रवार

पाना : 04

किंमत : 00.50 पैसा

111 दिन की जंग के बाद थमे हथियार, लेकिन असली परीक्षा अब शुरू; अमेरिका-ईरान समझौते से बदलेगा पश्चिम एशिया का समीकरण

पेरिस। तीन महीने से अधिक समय तक चले भीषण संघर्ष, वैश्विक ऊर्जा बाजार में उथल-पुथल और युद्ध के बढ़ते दायरे की आशंकाओं के बीच आखिरकार अमेरिका और ईरान ने शांति की दिशा में बड़ा कदम बढ़ाया है। फ्रांस के ऐतिहासिक वसाय पैलैस में दोनों देशों के बीच एक अंतरिम शांति समझौते पर हस्ताक्षर हुए हैं, जिसे हाल के वर्षों की सबसे महत्वपूर्ण कूटनीतिक घटनाओं में से एक माना जा रहा है। इस समझौते का सबसे बड़ा असर दुनिया की ऊर्जा आपूर्ति की जीवनरेखा माने जाने वाले होर्मुज जलडमरूमध्य पर पड़ने वाला है, जहां लंबे समय से बना गतिरोध वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए चिंता का विषय बना हुआ था। समझौते पर अमेरिकी राष्ट्रपति Donald Trump और ईरानी राष्ट्रपति Masoud Pezeshkian ने हस्ताक्षर किए। समझौते को

औपचारिक रूप से “इस्लामाबाद मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग” कहा जा रहा है, जिसमें पाकिस्तान ने मध्यस्थ की भूमिका निभाई है। यह समझौता तत्काल युद्धविराम, समुद्री मार्गों को खोलने और अगले 60 दिनों के भीतर स्थायी समाधान की दिशा में वार्ता का ढांचा तैयार करता है। यह समझौता केवल युद्ध रोकने का दस्तावेज नहीं है, बल्कि पश्चिम एशिया की बदलती भू-राजनीति का संकेत भी माना जा रहा है। युद्ध के दौरान तेल आपूर्ति प्रभावित होने, जहाजरानी पर संकट गहराने और क्षेत्रीय तनाव बढ़ने से वैश्विक बाजारों में अनिश्चितता का माहौल बन गया था। अब होर्मुज जलडमरूमध्य में व्यापारिक जहाजों की आवाजाही सामान्य करने की प्रक्रिया शुरू होने से दुनिया के ऊर्जा बाजारों को राहत मिलने की उम्मीद है। भारत जैसे बड़े तेल आयातक देशों के लिए भी यह घटनाक्रम महत्वपूर्ण माना जा रहा है।



है। समझौते के तहत ईरान ने वादा किया है कि वह परमाणु हथियार हासिल नहीं करेगा, जबकि अमेरिका ने

चरणबद्ध आर्थिक राहत और प्रतिबंधों में ढील की दिशा में आगे बढ़ने की सहमति जताई है। साथ ही ईरान के पुनर्निर्माण और आर्थिक पुनरुत्थान

के लिए सैकड़ों अरब डॉलर के अंतरराष्ट्रीय वित्तीय ढांचे पर भी चर्चा हुई है। हालांकि इस फंडिंग के स्वरूप और स्रोत को लेकर अभी

भी विभिन्न पक्षों की अलग-अलग व्याख्याएं सामने आ रही हैं। कूटनीतिक हलकों में इस समझौते को एक बड़ी सफलता माना जा रहा है, लेकिन इसके साथ कई गंभीर सवाल भी जुड़े हुए हैं। सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या यह केवल अस्थायी युद्धविराम है या वास्तव में स्थायी शांति की शुरुआत। कई विशेषज्ञों का मानना है कि यह समझौता फिलहाल संघर्ष को रोकने का ढांचा प्रदान करता है, लेकिन परमाणु कार्यक्रम, मिसाइल क्षमता, क्षेत्रीय प्रभाव और सुरक्षा गारंटी जैसे जटिल मुद्दे अभी भी पूरी तरह सुलझे नहीं हैं। अगले 60 दिन इसलिए बेहद अहम माने जा रहे हैं। इसी अवधि में दोनों देशों को परमाणु कार्यक्रम की निगरानी, प्रतिबंधों में ढील, समुद्री सुरक्षा और भविष्य की राजनीतिक व्यवस्था जैसे मुद्दों पर ठोस सहमति बनानी होगी। यदि वार्ता सफल रहती है तो यह समझौता पश्चिम

एशिया में स्थिरता का नया अध्याय खोल सकता है। लेकिन यदि किसी भी पक्ष को लगे कि दूसरा अपनी प्रतिबद्धताओं का पालन नहीं कर रहा है, तो तनाव फिर से बढ़ सकता है। इस समझौते ने क्षेत्रीय राजनीति में भी नई हलचल पैदा कर दी है। कुछ देशों ने इसे युद्ध समाप्त करने की दिशा में साहसिक कदम बताया है, जबकि कुछ रणनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि समझौते की कई शर्तें भविष्य में नए विवादों को जन्म दे सकती हैं। विशेष रूप से परमाणु कार्यक्रम और क्षेत्रीय सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर अभी लंबी बातचीत बाकी है। संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने समझौते का स्वागत करते हुए दोनों देशों से संयम बनाए रखने की और वार्ता को ईमानदारी से आगे बढ़ाने की अपील की है। वैश्विक स्तर पर भी उम्मीद जताई जा रही है कि यह पहल न केवल युद्ध को रोकेगी, बल्कि ऊर्जा आपूर्ति, व्यापार

और क्षेत्रीय सुरक्षा के मोर्चे पर भी सकारात्मक प्रभाव डालेगी। हालांकि इतिहास गवाह है कि पश्चिम एशिया में कई बार युद्धविराम और समझौते हुए, लेकिन स्थायी शांति तक पहुंचना आसान नहीं रहा। यही कारण है कि दुनिया की निगाहें अब अगले दो महीनों पर टिकी हैं। यदि अमेरिका और ईरान अपने मतभेदों को बातचीत के जरिए सुलझाने में सफल रहते हैं तो यह केवल दो देशों के बीच समझौता नहीं होगा, बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए एक नई शुरुआत साबित हो सकता है। लेकिन यदि वार्ता विफल रही तो वर्तमान युद्धविराम भी लंबे समय तक टिक पाएगा या नहीं, यह कहना अभी जल्दबाजी होगी। फिलहाल इतना जरूर है कि 111 दिनों तक चली विनाशकारी जंग के बाद दुनिया ने राहत की सांस ली है और उम्मीद की जा रही है कि बंदूकें खामोश रहने के साथ कूटनीति की आवाज और मजबूत होगी।

आस्था की आड़ में 15 साल का अत्याचार! ‘भगवान’ बनने वाले बाबा का काला साम्राज्य बेनकाब, महिला ने सुनाई रूह कंपा देने वाली दास्तान

पुणे। धर्म, अध्यात्म और भक्ति के नाम पर लोगों की भावनाओं से खिलवाड़ करने वाले एक कथित बाबा का ऐसा भयावह चेहरा सामने आया है, जिसने समाज को झकझोर कर रखा दिया है। खुद को भगवान का अवतार और अलौकिक शक्तियों का स्वामी बताते वाला यह व्यक्ति वर्षों तक एक महिला का कथित तौर पर यौन, मानसिक और शारीरिक शोषण करता रहा। जब पीड़िता ने हिम्मत जुटाकर पुलिस के सामने अपनी आपबीती रखी, तो जांच में ऐसे-ऐसे खुलासे हुए जिन्होंने आश्रम की चमक-दमक के पीछे छिपे अंधेरे संसार को उजागर कर दिया। पुणे पुलिस ने हरियाणा निवासी 59 वर्षीय राधामोहन मिश्रा को उसके सात सहयोगियों के साथ गिरफ्तार किया है। आरोपी पुणे के एक बंगले से आश्रम संचालित करता था और दावा करता था कि उसके पास ऐसी दिव्य शक्तियां हैं जो लोगों की हर समस्या का समाधान कर सकती हैं। पुलिस ने सभी आरोपियों को अदालत में पेश किया, जहां से उन्हें 20 जून तक पुलिस हिरासत में भेज दिया गया। मामले की शिकायत करने वाली 41 वर्षीय महिला ने जो आरोप लगाए हैं, वे किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को झकझोर देने के लिए पर्याप्त हैं। महिला का कहना है कि वह वर्षों पहले अपनी पारिवारिक और व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान की उम्मीद लेकर

आरोपी के संपर्क में आई थी। शुरुआत में आरोपी ने उसे विश्वास दिलाया कि वह विशेष आध्यात्मिक शक्तियों का मालिक है और उसकी जिंदगी की हर परेशानी दूर कर सकता है। धीरे-धीरे महिला का भरोसा जीतने के बाद उसने उसे अपने प्रभाव और नियंत्रण में ले लिया। पीड़िता के अनुसार, इसके बाद शुरू हुआ शोषण का ऐसा सिलसिला जो करीब डेढ़ दशक तक चलता रहा। महिला का आरोप है कि आरोपी ने धार्मिक और आध्यात्मिक अनुष्ठानों के नाम पर उसका यौन शोषण किया। इतना ही नहीं, उसे मानसिक रूप से तोड़ने और पूरी तरह अपने नियंत्रण में रखने के लिए अमानवीय तरीके अपनाए गए। महिला ने पुलिस को बताया कि उसे कई बार बिजली के झटके दिए गए, अमानसित किया गया और यहां तक कि यूरिन पीने के लिए भी मजबूर किया गया। इन सबको कथित तौर पर आध्यात्मिक शुद्धिकरण और साधना का हिस्सा बताकर सही ठहराया जाता था। जांच में सामने आया है कि आरोपी ने महिला को उसके परिवार और पति से दूर करने की भी कोशिश की। उसे लगातार यह विश्वास दिलाया गया कि आध्यात्मिक उन्नति के लिए पारिवारिक रिश्तों से दूरी बनाना जरूरी है। धीरे-धीरे महिला सामाजिक रूप से अलग-थलग पड़ती गई और आश्रम के लोगों पर

उसकी निर्भरता बढ़ती चली गई। पुलिस का मानना है कि यह मनोवैज्ञानिक नियंत्रण की एक सुनियोजित प्रक्रिया थी, जिसके जरिए पीड़िता को पूरी तरह आरोपी के प्रभाव में रखा गया। मामले का एक और चौंका देने वाला पहलू निगरानी और ब्लैकमेलिंग से जुड़ा है। पुलिस के अनुसार, महिला के कमरे में सीसीटीवी कैमरे लगाए गए थे और उसकी हर गतिविधि पर नजर रखी जाती थी। उसे लगातार यह महसूस कराया जाता था कि उसकी हर हरकत रिकॉर्ड हो रही है। जांच में यह भी सामने आया है कि आरोपी ने महिला और उसके पति के निजी वीडियो अपने कब्जे में ले लिए थे। आरोप है कि इन वीडियो का इस्तेमाल महिला को डराने, धमकाने और चुप रखने के लिए किया जाता था। वर्षों तक प्रताड़ना सहने के बाद आखिरकार एक दिन महिला ने विरोध करने का फैसला किया। पुलिस के अनुसार, उसने आश्रम में लगे कुछ सीसीटीवी कैमरे तोड़ दिए और वहां से निकलकर अपने परिवार के पास पहुंची। परिवार को पूरी घटना बताने के बाद मामला पुलिस तक पहुंचा और फिर जांच का सिलसिला शुरू हुआ। प्रारंभिक जांच में मिले तथ्यों के आधार पर पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए आरोपी और उसके सहयोगियों को गिरफ्तार कर लिया।

जांच एजेंसियों को आशंका है कि यह मामला केवल एक महिला तक सीमित नहीं हो सकता। पुलिस के अनुसार, राधामोहन मिश्रा ‘आधुनिक गुरुकुल’ चलाने का दावा करता था और लोगों को यह विश्वास दिलाता था कि वह भविष्य देख सकता है तथा बच्चों को विशेष शिक्षा और संस्कार प्रदान कर सकता है। कई परिवारों को अपने बच्चों को आश्रम में भेजने के लिए प्रेरित किया जाता था। अब पुलिस यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि कहीं आश्रम में रहने वाले अन्य लोग और बच्चे भी किसी प्रकार के शोषण का शिकार तो नहीं हुए। जांच के दौरान एक और सनसनीखेज जानकारी सामने आई है। पुलिस को संदेह है कि आरोपी आश्रम परिसर से भागने के लिए एक भूमिगत सुरंग तैयार करवा रहा था। अधिकारियों का मानना है कि यदि यह तथ्य सही साबित होता है तो यह दर्शाता है कि आरोपी को भविष्य में कानूनी कार्रवाई की आशंका थी और वह पहले ही बच निकलने की तैयारी कर रहा था। पुलिस का कहना है कि आरोपी का नेटवर्क केवल महाराष्ट्र तक सीमित नहीं है। उसके अनुयायी हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और अन्य उत्तर भारतीय राज्यों में भी फैले हुए बताए जा रहे हैं। इसी कारण जांच का दायरा लगातार बढ़ाया जा रहा है। पुलिस डिजिटल रिकॉर्ड, वित्तीय लेन-देन, आश्रम के दस्तावेज और वहां रहने वाले लोगों की जानकारी जुटा रही है।

आधी आबादी अब भी इंतजार में, महिला आरक्षण कानून के बावजूद राजनीति में नहीं खुल रहे अवसरों के द्वार

नई दिल्ली। देश की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने और उन्हें निर्णय प्रक्रिया में बराबरी का स्थान दिलाने के उद्देश्य से संसद ने थले ही महिला आरक्षण कानून को ऐतिहासिक उपलब्धि बताकर पारित किया हो, लेकिन जमीनी हकीकत अभी भी उम्मीदों से काफी दूर दिखाई दे रही है। चुनाव सुधारों पर काम करने वाली संस्था एडीआर की ताजा रिपोर्ट ने राजनीतिक दलों के उन दावों की पोल खोल दी है, जिनमें महिलाओं को सशक्त बनाने और राजनीति में उनकी भागीदारी बढ़ाने की बात कही जाती है। रिपोर्ट के अनुसार, महिला आरक्षण कानून पारित होने के बाद हुए चुनावों में भी महिलाओं को उम्मीदवार बनाने के मामले में राजनीतिक दलों का रवैया लगभग पहले जैसा ही बना हुआ है। देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा महिलाएं हैं। मतदाता सूची में भी महिलाओं की संख्या 66 करोड़ से अधिक है। पंचायतों से लेकर संसद तक महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की बातें लगातार की जाती हैं। महिला सशक्तिकरण के नाम पर अनेक योजनाएं और अभियान चलाए जाते हैं, लेकिन जब चुनावी टिकट बांटने की बारी आती है तो अधिकांश राजनीतिक दल महिलाओं को पर्याप्त अवसर देने से पीछे हट जाते हैं। यही कारण है कि महिला आरक्षण कानून के बावजूद राजनीतिक प्रतिनिधित्व के क्षेत्र में अपेक्षाकृत बदलाव दिखाई



नहीं दे रहा है। एडीआर द्वारा जारी अध्ययन में लोकसभा और विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में 51 हजार से अधिक उम्मीदवारों के आंकड़ों को शामिल किया गया। रिपोर्ट बताती है कि कुल 51,708 उम्मीदवारों में केवल 5,095 महिलाएं हैं। लेकिन टिकट वितरण के समय महिलाओं को पर्याप्त अवसर नहीं मिलते। राष्ट्रीय दलों में भारतीय जनता पार्टी ने सबसे अधिक 16 प्रतिशत महिलाओं को टिकट दिया। कांग्रेस और मामले में अब भी गंभीरता नहीं दिखा रहे हैं। लोकसभा चुनाव के आंकड़े भी इसी तस्वीर को मजबूत करते हैं। वर्ष 2024 के आम चुनाव में कुल 8,360 उम्मीदवार मैदान में थे, लेकिन इनमें महिलाओं की संख्या सिर्फ 800 रही। कई संसदीय क्षेत्रों में तो स्थिति और भी चिंताजनक थी। देश की 543 लोकसभा सीटों में से 152 सीटें

महिला उम्मीदवार को मैदान में नहीं उतारा। परिणामस्वरूप 18वीं लोकसभा में महिला संसदों की संख्या केवल 74 तक सीमित रही, जो कुल सदन का लगभग 14 प्रतिशत हिस्सा है। यह संख्या निश्चित रूप से पहले की तुलना में बेहतर हो सकती है, लेकिन एडीआर द्वारा जारी अध्ययन में लोकसभा और विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में 51 हजार से अधिक उम्मीदवारों के आंकड़ों को शामिल किया गया। रिपोर्ट बताती है कि कुल 51,708 उम्मीदवारों में केवल 5,095 महिलाएं हैं। लेकिन टिकट वितरण के समय महिलाओं को पर्याप्त अवसर नहीं मिलते। राष्ट्रीय दलों में भारतीय जनता पार्टी ने सबसे अधिक 16 प्रतिशत महिलाओं को टिकट दिया। कांग्रेस और मामले में अब भी गंभीरता नहीं दिखा रहे हैं। लोकसभा चुनाव के आंकड़े भी इसी तस्वीर को मजबूत करते हैं। वर्ष 2024 के आम चुनाव में कुल 8,360 उम्मीदवार मैदान में थे, लेकिन इनमें महिलाओं की संख्या सिर्फ 800 रही। कई संसदीय क्षेत्रों में तो स्थिति और भी चिंताजनक थी। देश की 543 लोकसभा सीटों में से 152 सीटें

महिला उम्मीदवार को मैदान में नहीं उतारा। परिणामस्वरूप 18वीं लोकसभा में महिला संसदों की संख्या केवल 74 तक सीमित रही, जो कुल सदन का लगभग 14 प्रतिशत हिस्सा है। यह संख्या निश्चित रूप से पहले की तुलना में बेहतर हो सकती है, लेकिन एडीआर द्वारा जारी अध्ययन में लोकसभा और विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में 51 हजार से अधिक उम्मीदवारों के आंकड़ों को शामिल किया गया। रिपोर्ट बताती है कि कुल 51,708 उम्मीदवारों में केवल 5,095 महिलाएं हैं। लेकिन टिकट वितरण के समय महिलाओं को पर्याप्त अवसर नहीं मिलते। राष्ट्रीय दलों में भारतीय जनता पार्टी ने सबसे अधिक 16 प्रतिशत महिलाओं को टिकट दिया। कांग्रेस और मामले में अब भी गंभीरता नहीं दिखा रहे हैं। लोकसभा चुनाव के आंकड़े भी इसी तस्वीर को मजबूत करते हैं। वर्ष 2024 के आम चुनाव में कुल 8,360 उम्मीदवार मैदान में थे, लेकिन इनमें महिलाओं की संख्या सिर्फ 800 रही। कई संसदीय क्षेत्रों में तो स्थिति और भी चिंताजनक थी। देश की 543 लोकसभा सीटों में से 152 सीटें

AAP विधायक चैतर वसावा की उपस्थिति में सागबारा तालुका के खोपी में जनकल्याण शिविर और वृक्षारोपण कार्यक्रम का सफल आयोजन

» जनकल्याण शिविर में बड़ी संख्या में ग्रामीणों को मिले सरकारी योजनाओं के लाभ
» जनकल्याण शिविर के माध्यम से अंतिम छोर के गांवों तक योजनाएं पहुंचाने का प्रयास : चैतर वसावा
» किसी भी क्षेत्र का विकास केवल निर्वाचित प्रतिनिधियों या अधिकारियों के प्रयासों से संभव नहीं है, बल्कि अधिकारियों, पदाधिकारियों और जनता के सामूहिक प्रयासों से ही विकास की गति को बढ़ावा मिल सकता है : चैतर वसावा
» शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक विकास जैसे क्षेत्रों में सभी के सहयोग से क्षेत्र को अधिक प्रगतिशील बनाया जा सकता है :



अहमदाबाद/नर्मदा/गुजरात: आज नर्मदा जिले के सागबारा तालुका के खोपी में जनकल्याण शिविर तथा वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जनता की विभिन्न लंबित समस्याओं का समाधान करना तथा सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम छोर के गांवों तक पहुंचाना था। इस कार्यक्रम में आम आदमी पार्टी के डेडियापाड़ा विधानसभा क्षेत्र के विधायक चैतर वसावा, नर्मदा जिला पंचायत की कार्यकारी समिति की अध्यक्ष अस्मिताबेन आजादसिंह ठाकोर, नर्मदा जिला पंचायत की स्वास्थ्य समिति के चेयरमैन डॉ. दयाराम वसावा, सागबारा तालुका पंचायत के प्रमुख जगदीशभाई वसावा, तालुका पंचायत के कार्यकारी अध्यक्ष जयंतभाई वसावा, मार्गदर्शन और लाभ प्रदान न्याय समिति की अध्यक्ष प्रियंकाबेन वसावा, खोपी जिला पंचायत के सदस्य गिरधनभाई वसावा, सागबारा जिला पंचायत की सदस्य हेतलबेन चेतनभाई

तड़वी, पांचपीपरी तालुका पंचायत की सदस्य अनिताबेन कोठारी, नरवाड़ी तालुका पंचायत की सदस्य सुमनबेन तड़वी, बरकतुरा तालुका पंचायत की सदस्य भावतीबेन वसावा, देवसाकी तालुका पंचायत की सदस्य आर्त्तिकाबेन वसावा, उभारिया तालुका पंचायत की सदस्य अंजुबेन वसावा, नाल तालुका पंचायत की सदस्य वीणाबेन वसावा तथा सिमआमली तालुका पंचायत के सदस्य चमारियाभाई वसावा सहित प्रशासनिक तंत्र के अधिकारी और बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे। इस अवसर पर विधायक चैतर वसावा ने कहा कि सरकार की विभिन्न विकासोन्मुख और कल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने, इसके लिए जनकल्याण शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर में विभिन्न विभागों के अधिकारियों द्वारा लोगों को योजनाओं के बारे में मार्गदर्शन दिया गया तथा स्थल पर ही अनेक सेवाएं और लाभ प्रदान किए गए।

उन्होंने आगे कहा कि किसी भी क्षेत्र का विकास केवल निर्वाचित प्रतिनिधियों या अधिकारियों के प्रयासों से संभव नहीं है, बल्कि अधिकारियों, पदाधिकारियों और जनता के सामूहिक प्रयासों से ही विकास की गति को बढ़ावा मिल सकता है। शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक विकास जैसे क्षेत्रों में सभी के सहयोग से क्षेत्र को अधिक प्रगतिशील बनाया जा सकता है। कार्यक्रम के दौरान तालुका विकास अधिकारी, मामलतदार तथा विभिन्न विभागों के अधिकारी, कर्मचारी और लाभार्थी उपस्थित रहे। बड़ी संख्या में ग्रामीणों, सरपंचों, तालुका और जिला पंचायत के सदस्यों तथा अन्य अग्रणियों की उपस्थिति में कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। जनकल्याण शिविर में विभिन्न योजनाओं के संबंध में जानकारी, मार्गदर्शन और लाभ प्रदान किए गए, जिससे स्थानीय लोगों में उत्साह देखने को मिला। आयोजकों ने बताया कि सभी के सहयोग और संयुक्त प्रयासों से कार्यक्रम सफल रहा।

नवसर्जन संस्कृति

हिन्दी

JioTV

CHENNAL NO. 2063

Jio Air Fiber

Jio Tv +

Jio Fiber

Daily Hunt

ebaba Tv

Dish Plus

DTH live OTT

Rock TV

Airtel

Amezone Fire

Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार प्राप्त करने के लिए आज ही नवसर्जन संस्कृति हिंदी चैनल देखिये



संपादकीय

क्वालिटी कंट्रोल हेतु जरूरी डॉक्टर की पर्ची

भारत में छोटे-मोटे रोगों के उपचार के लिये मेडिकल स्टोरों से दवा लेकर खाने की लोगों में आदत पायी जाती है। यह जान बहर कि फेरुलू नीम-हकीमी जानी को खतरे में भी डाल सकती है। भारत तथा कई अन्य देशों में देश में बने सिरप के सेवन से बच्चों की मृत्यु से बचाव से दवा उपयोग पर आंच आई थी। यही वजह है कि खांसी से अन्य दवाओं के सिरप की बिना डाक्टर की पर्ची के विक्री पर रोक लगाने का फैसला सरकार को लेना पड़ा है। निश्चय ही केंद्र सरकार द्वारा यह फैसला सही समय पर लिया गया जरूरी कदम कहा जा सकता है। निस्पंदेह, सरकार के इस कदम को स्वासर्वाधिकार के स्वास्थ्य से जुड़ी सुरक्षा को मजबूत करने की बड़ी कोशिश का हिस्सा माना जाना चाहिए। हालांकि कुछ दुखद घटनाओं के यातना परिणामों में महेननजर लोगों को हर खांसी-जुकाम आदि छोटे-मोटे रोगों के लिये खुद दवा लेने की आदत से परहेज करना चाहिए। हरअवसर, भारत में लंबे समय से ऐसी धारणा रही है कि ये सिरप आदि दवाइयाँ मौसमी बीमारियों के लिये नुकसान-रहित होती हैं। लेकिन अफिलथु कुछ समय में हुई दुखद घटनाओं से इनके अप्रत्याशित प्रयोग और दवा निर्माण से जुड़े कमजोर नियमन को ही उजागर किया है। सरकार को ये कदम उठाना अनेक दुखद घटनाओं के सामने आने के बाद उठाना पड़ा है, जब इन दवाओं के उत्पादन में गंभीर खामियाँ आती हैं। कुछ समय पहले अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आरोप लगाए गए थे कि गैर्बिया, उज्बेकिस्तान और कैमरून आदि देशों में दर्जनों बच्चों की मौत भारत में बने दूषित खांसी के सिरप के उपयोग से हुई थी। इसतना ही नहीं, देश के भीतर भी दूषित दवाओं से जुड़ी मौतों की खबरों ने इन सिरपों की गुणवत्ता नियमन, परीक्षण और निगरानी पर गाहे-बगाहे सवाल उठाए हैं। निश्चित रूप से इन दुखद घटनाओं ने दुनिया भर में सस्ती दवाओं की आपूर्ति करने वाले भारत की प्रतिष्ठा को नुकसान ही पहुँचाया है। सरकार की हालाँति पहल को इसी दिशा में उठाया गए कदम के रूप में देखा जा चाहिए।

लोकन सवाल सिरप कफ सिरप का हा नही है। अक्सर भारतीयों की आदत में शुमार है कि लोग अक्सर खांसी-बुखार की दवाइयों उद्य जाने बगैर सेवन करते हैं कि उनमें क्या-क्या मिला है। यह भी कि इनके उपयोगमें से हमारे शरीर में क्या-क्या साइड-इफेक्ट हो रहे हो सकते हैं। यह भी जानने की कोशिश नहीं होती है कि इन सिरप आदि को अन्य दवाओं के साथ लेने से क्या-क्या नकारात्मक प्रतिक्रिया हमारे शरीर में हो सकती है। बहरहाल, अब जब सरकार ने तय कर दिया है कि अनुभवों डॉक्टर की सलाह से ही सिरप आदि खरीदे जा सकते हैं तो मरीजों के तितारदार तय कर संकेते कि किस कंपनी की गुणवत्ता वाली दवा खरीदी है। जिससे न केवल इण्डिया सही हो सकेगा बल्कि यह भी सुनिश्चित हो सकेगा कि मरीज के शरीर में कोई अन्य बीमारी छूट न जाए। लेकिन यह कहनी कठोर यह भी है कि सिर्फ कठोर कानून बनाये मात्र से ही बेहतर परिणाम हासिल नहीं किए जा सकते हैं। भारत में पहले से ही दवाइयों की बिक्री के नियमन से जुड़े कानूनों की कमी नहीं है। इसके बावजूद डॉक्टर की पर्ची पर ही उपलब्ध होने वाली दवाइयों अक्सर बिना पर्याप्त जांच-पड़ताल के ही आसानी से उपलब्ध कर ली जा पाया करती हैं। दरअसल, मीडिकल स्टोरों में मिल जाया करती हैं। दरअसल, उपलब्ध कर ली कानून का अनुपालन सख्ती से करने की होती है। जब तब देश में तमाम कामियों की नियमित जांच नही होती, कानून का उल्लंघन करने पर कड़े दंड का प्रावधान नहीं होता, मात्र नये नियम-कानून महज अच्छे इरादे वाले निदेश मात्र बनकर रह जायेंगे। ऐसे में इस प्रयास का जमीनी असर बेहद कम की रह पायेगा। वास्तव में देश में बड़ा उत्पादक इण्डिया-कंट्रोल अथॉरिटी, नियमित गुणवत्ता जांच के अलावा जन चेतना अभियान चलाये की सख्त जरूरत है। लोगों को बिना डॉक्टर के परामर्श के दवा लेने के खतरों से अवगत करना होगा। निस्संदेह, सरकार द्वारा चिकित्सक के परामर्श पर ही सिरप आदि की उपलब्धता से जुड़े नियम की कामयाबी इस बात पर निर्भर करेगी कि हम किस सीमा तक एक जवाबदेह सिस्टम बना पाते हैं।

આંખેયાન

हिमालय की गोद में छिपा दिव्य रहस्य: क्यों पंचकेदार यात्रा को माना जाता है मोक्ष का मार्ग

पर्वतों की आध्यात्मिक परंपरा में हिमालय केवल एक पर्वतों का समूह नहीं है, बल्कि उससे देना और प्राप्त करने का सन्तुलन और क्रियेयों में पौरुषीय माना जाता है। अनादि काल से साधु-संत, योगी और भक्त हिमालय की ओर आकर्षित होते रहे हैं, क्योंकि हिमालय की वादियों में एक अद्वैत आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव होता है। इन्हीं पर्वत हिमालयी क्षेत्रों में स्थित है पंचकेदार, जो भगवान् में पंचकेदार विद्यय के धर्मों का समूह है। हिंदू धर्म में पंचकेदार शिव को अपने पसंदीदा योगी और मोक्ष प्रदान करने वाली यात्रा माना जाता है। मान्यता है कि जो अश्रुप्रसूत श्रद्धा और भक्ति के साथ पंचकेदार का दर्शन करता है, उसके जीवन के अनेक पाप नष्ट हो जाते हैं और उसे भगवान् शिव की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

पंचकेदार का इतिहास केवल धार्मिक आस्था तक नहीं सीमित है, बल्कि इसका संबंध महाभारत काल की उस महत्वपूर्ण घटना से भी जुड़ा है जिसने मानव इतिहास और धर्म की दिशा बदल दी। पौराणिक कथाओं के अनुसार द्रुपद महर्षि का भीषण युद्ध समाप्त हुआ, तब पांडवों को विजय तो प्राप्त हुई, लेकिन उनके धर्म में संतुलन नहीं था। युद्ध में लड़कों युद्धाओं की मृत्यु हुई थी। अपने ही स्वर्णियों, युद्धाओं और परिणजनों के वध का बोझ उनके हृदय पर था। उन्हें यह एहसास था कि युद्ध धर्म के रक्षा के लिए लड़ा गया था, लेकिन कर्मधर्म के कारण केवल उन पाप का भार भी आ गया है। इसी पाप से मुक्ति लेने का शरण लेने का भावना शिव व माना जाता है। के पापों का ना करने है। पा आशीर्वाद लेकिन महादेव शिव वह उन्ने पांडव भी मस्त तुरंत दर्शन नहीं छोड़कर हिमालय के वैल आश्रित पांडवों की हार शिव को खोने घाटियों तक फ पांडव उन प पहुंचे हैं, तो वे समारोह। तो दो पर्वतों के व का प्रयास किन्तु की पैरों को प के शरीर पर के शंभर अलग- यही पांच स्थान प्रसिद्ध हुए। इन पांचों धामों विभिन्न अंग प्र

न्याय व्यवस्था में सुधार के लिए हमें फॉरेंसिक मनोविज्ञान और 'व्यवहार विश्लेषण' पर अधिक निवेश करने की आवश्यकता है। जब जांच में मशीनी डेटा के साथ अनुभवी मनोवैज्ञानिक का विवेक जुड़ता है, तभी परिणाम अधिक विश्वसनीय, तर्कसंगत और मानवीय होते हैं।

પ્રેરણા

जीवन को यात्रा में सफलता प्राप्त करना हर व्यक्ति का सपना होता है। कोई शिक्षक के क्षेत्र में अपने बड़ना चाहता है, कोई व्यापार में नाम कमाना चाहता है, तो कोई कला, साहित्य, विज्ञान या खेल के माध्यम से अपनी पहचान बनाना चाहता है। लेकिन इन सभी सपनों को यह भी पकड़ना समान रूप से उपलब्ध नहीं है—संभवतः संसार के बिना सफलता की कल्पना नहीं की जा सकती। संस्कृत में सफलता का मूल्य भी तभी समझ आता है जब व्यक्ति कठिनाईयों, असफलताओं और निराशाओं का सामना करता है। जो लोग इन चुनौतियों में सामने टिके रहते हैं, वहीं अंततः अपने जीवन में यह मुकाम हासिल करते हैं। जिसकी उन्होंने कल्पना की होती है। बहुत से लोग यह मानते हैं कि सफल व्यक्ति हम से ही विशेष प्रतिभा लेकर आते हैं। लेकिन इतिहास का अध्ययन करना पर पता चलता है कि महानता का रहस्य केवल प्रतिभा नहीं, बल्कि धैर्य, दृढ़ता और निरंतर प्रयास है। प्रतिभा व्यक्ति को शुरुआत में प्रेरित करती है, लेकिन प्रयास वह कण्ठ्यां का काम उसका धैर्य करता है। यही कारण है कि अनेक साधारण लोग भी असाधारण उपलब्धियाँ प्राप्त कर लेते हैं, जबकि कुछ प्रतिभावाली लोग बीच रास्ते में हार मान लेते हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार थॉमस कार्लाइल का जीवन इस तथ्य को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। उन्होंने फ्रांसीसी क्रांति के इतिहास पर आधारित एक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखने का अभियान किया, अनेक संशोधन के लिए उन्होंने पूरे विश्व का अध्ययन किया, अनेक स्रोतों का विश्लेषण किया और अपनी पूरी ऊर्जा लेखन में लगा दी। लंबे समय की मेहनत के बाद जब पुस्तक का पहला मौल्य तैयार हुआ तो उन्होंने लगा कि उनका सपना अब सकारा होने वाला है। उन्होंने उस पंडुलिपि को अपने मित्र के पास पहुंचा और सुझाव देने के लिए भेज दिया।



हिमालय की गोद में छिपा दिव्य रहस्य: क्यों पंचकेदार यात्रा को माना जाता है मोक्ष का मार्ग

पंडितों ने भगवान शिव की स्तुति किया।
 और पुनर्जन्म का देवता
 ऐसे देव हैं जो अपने भक्तों
 उन्हें भीष्मा का मार्ग प्रदान
 पहुँचने और भगवान शिव
 का प्रयास किया,
 प्रयत्न नहीं थे। भगवान
 प्रभु ने हुई हिंसा के लिए
 थे। इसलिए वे पंडितों को
 चाहते थे। शिवजी कशी
 और नचे गए और वहाँ
 धूप धारण कर लिया।
 बाले नहीं थे। वे भगवान
 हुए हिमालय की दुर्गम
 गए। जब शिवजी ने देखा
 कि करते हुए यहां तक आ
 के रूप में धरती के भीतर
 ने अपने विशाल रूप में
 दे होकर बैल को येकने
 जात बैल के कि भीम ने बैल
 गए, लेकिन उसी क्षण बैल
 विभाजित होकर हिमालय
 स्थानों पर प्रकट हो गए।
 में पंचदेवार के रूप में

मांग को लेकर छिड़ी बहस संसदीयता पर फिर प्रसिद्धिप्राप्त आन्दोलन द्वारा खान सर के संदर्भ में की गई नाकों के समानस के उस भ्रम को गहक ही अपराध का अंतिम न्याय के तराजु पर क्या नवनवीय सत्य को तोलने में नेचली आदालतों ने हाई-कोर्ट/प्रीमो प्राल टेस्ट की अनुमति नहीं प्रदान करती है, जिसमें 'ड' भी चर्चा का विषय रहा। पर अदालतों को 'सत्य मत' पर प्राप्ता प्राप्त मशीनी डेटा 'स्पष्ट' जांच को दिशा देने वाली भारत के 'आरक्षण तलवार सड़क' किया कि ऐसे परीक्षण प्रमाणक नहीं होते और इनके जांच को विश्वसनीयता प्रमाणक कहें हैं। सच कड़वा होता नमकवा ओढ़ना आसान। जो को झुट पकड़ने का अचूक है, जबकि विचारवादी और, सच से यह अत्यंत विचारवादी अनुभाव झुट पकड़ना विज्ञान नहीं है; फिल्लों में प्रसीना आना की निशाना माना जाता है, यह यादक हो सकता है। ओथेलो पर' कहा जाता 'युव व्यक्ति का स्वभाविक व्यवहारवादी जांचकर्ताओं को तट होता है। याद रहे, मशीनें यह यादक को मापती हैं, मानवीय को नहीं। 'कॉम्पिटिव लोड' प्रमाणक प्रेक्षित विषयवस्तु का



हार नहीं, दूसरा अवसर होती है हर असफलता

ये भी बचपन से मेड़ पर ले आता है। वहाँ
रीशूख खूश होती है। कुछ दिनों बाद उनके
काल्हल बत्ताया कि घर की नौकरीनी ने उन
अनुपयुगीय समझ लिया और अधिकारंश
क सामने वौँ का परिश्रम राख बन चुका
है। मैंने उन्हें अपना समथ, ज्ञान और समर्पण
अचानक समाप्त हो गया था।
मनूसी भी व्यक्ति को तोड़ सकती है। मनूस्य
में से अपना सत्कर्म ब्रथा देता है और फिर
उन्हें हो जाता है, तो उसके मन में निराशा का
उकड़ो है। काल्हल भी हारु दुख में डूब गए।
कहने को कोई नया कार्य नहीं था। उन्हें
क अब फिर से शूखआ करता संयंत्र नहीं
बा-बार उसी चीज को याद करता और वे
हृदय मसूस करी।
मैं सबसे बड़ी वित्तीय समस्या है कि वह
के बीच आशा की एक किरण छिपाकर
दिन काल्हल घर से बाहर निकले। वे
परिशेष उम्मेद के सहकर पर चल रहे थे।
जब एक मजदूर पर पड़ी जो एक दीवार का
पट्टा था, वह व्यक्ति अत्यंत शांति और धैर्य के
ई जोड़ रहा था। उसके चेहरे पर किसी
पीड़ा नहीं थी। वह केवल अपने वर्तमान
के प्रति निराश हुए था। काल्हल कुछ देर
तोते रहे। अनामक उनके मन में एक विचार
महसूस किया कि वह विप्लव दीवार भी
में नहीं बना है। वह एक-एक ईं जोड़ने से
होती है। उसी प्रकार उनका पुनर्जन भी एक-एक
बनी थी। यदि वह हल्ले एक बार लिखी



कसी जादुई मशीन का नहीं। ठीक यही छूटाछूट के दौरान होती है; एक निर्दोष पुलिस के माहौल, पूछताछ के दबाव प्रतिष्ठा खोने के डर से घबरा सकता छोड़ सकता है या उसकी हृदय गति ही है।

राज्य अमेरिका में एलिट्स एम्स अपनी शारीरिक
ए अधिकारी एवं सोवियत जासूस) और इन मशीनों को
किलर' (डेनिस राडर) जैसे मामले हैं, अतः ये तक
करते हैं कि पॉलीग्राफ परीक्षण पूरी पैमाना नहीं हो स
व्यवस्थानीय नहीं हैं। एलिट्स एम्स जैसे सेल्वी बनाम क

होती है हर असफलता

जा सकती थी, तो दोबारा भी लिखी जा सकती थी। उस मजदूर को साधारण-सी लगने वाली मेहनत ने उनके जीवन पर आत्यन्तिकावस्था जगा दिया।

वे तुरंत घर लौटे और फिर से लेखन कार्य आरंभ कर दिया। इस बार उनके सामने चुनौती और भी बड़ी थी क्योंकि उन्हें बहुत-सी बातें स्मृति के आधार पर दोबारा लिखनी थीं। फिर भी उन्होंने यही नतीजा बोध। वे प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा लिखते रहे। धीरे-धीरे पृष्ठ बढ़ते गए और महीनों बाद पूरी पुस्तक तैयार हो गई। जब वह पुस्तक लिख रहे थे उसी वर्ष एक सहायक और इतिहास के क्षेत्र में उसे महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ।

इस घटना ने कार्बाल को एक अमूल्य शिक्षा दी। उन्होंने समझ लिया कि जीवन में असफलता का अर्थ सम्पत्ति नहीं होता। असफलता केवल यह बताती है कि व्यक्ति को दोबारा प्रयास करना है। जो लोग असफलता को अंत मान लेंगे हैं, वे अपने अस्वर स्वयं को खदे देंगे। लेकिन जो लोग उसे सेख और अनुभव के रूप में स्वीकार करेंगे, वे आगे बढ़ते रहेंगे और अंत में सफलता प्राप्त करेंगे।

आज के समय में यह शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। आधुनिक जीवन में लोग बहुत जल्दी परिणाम चाहते हैं। यदि उन्हें तुरंत सफलता नहीं मिलती तो वे निराश हो जाते हैं। विद्यार्थी एक परीक्षा में कम अंक आने पर हताश हो जाता है। युवा नौकरी में मिलने पर अपना आत्मविश्वास खो देता है। व्यापारी एक बार निष्कर्ष होने पर नए प्रयास से डरने लगते हैं। लेकिन इतिहास और अनुभव दोनों बताते हैं कि सफलता नहीं लोगों को मिलती है जो अपने असफलताओं के बावजूद प्रयास करना नहीं छोड़ें।

दुनिया के अनेक महान व्यक्तियों ने अपने जीवन में बार-बार असफलताओं का सामना किया। कई वैज्ञानिकों के प्रयोग हजारों बार विफल हुए, तब जाकर उन्हें सफलता मिली।

किया, और
की स्वतः
लिखना
बन गई
और नि
थैयं क
वास्तवि
बने रह
करते र
उदेय
असथा
दूसरों
जीवन
आती।
आगे भ
संघर्षों
यदि ज
जाय य
सम्मान
शुरूआ
की कर
कभी ह
भी कर
और क
सकता
व्यक्ति
असंत
अंततः

नेत्रित्रि कर पॅलीग्राफ को

हण और डिजिटल फॉरेंसिक
नही बेनकाब किया। स्पष्ट
कवल एक 'संभावना' जता
ता नहीं। प्रशिक्षित अपराधी
तत्क्रियाओं पर काबू पाकर
न सिर्फ कर सकते
नही भी सत्य का अंतिम
नी।

क राज्य (2010) मामले
स रोका, न्या
है।
कनाडा के सुप्र
मनाकर खारि
दीवानी मामले
है। यूरोप में
माना जाता है
जैसे देशों में
वैज्ञानिक दृष्टि
का अभाव है,

T

कम छिलाड़ियों वें नयाँ तक बार का समाना
जाकर वे विश्व विजेता बनें। कोई लेखकों
प्रभाव में असंयोजक दिव्य नहीं है, लेकिन उन्होंने
नहीं छोड़ा और बाद में वही रचनाएं कालजयी
सभी उदाहरणों में एक बाद समान है—धैर्य
प्रवास।
जैसे केवल प्रतीक्षा करना नहीं है। धैर्य का
अर्थ है कठिन परिस्थितियों में भी सकारात्मक
और अपने लक्ष्य की दिशा में लगातार कार्य
। जब व्यक्ति कठिनाइयों के बीच भी अपने
विषयवासन बना रखता है, तब तो उसके भीतर
शक्ति विकसित होती है। यही शक्ति उसे
बलवान बनाती है।
आने वाली बाधाएं हमें रोकेने के लिए नहीं
में मजबूत बनाने के लिए आती हैं। जैसे सोना
कठक अधिक मूल्यवान बनाता है, वैसे भी मनुष्य
कठक अधिक परिष्कार और सक्षम बनाता है।
में कभी कोई हानि हो जाए, कोई समान टूट
है प्रयास विफल हो जाए, तो उसे अंत नहीं
होना चाहिए। हर असफलता भी हमें एक नई
व अवसर छिपाए रहती है। थॉमस कार्लाइल
हमें यही सिखाते हैं कि सफलता का रहस्य
मानने में छिपा है। परिस्थितियाँ चाहे कितनी
हो, यही व्यक्ति अपने भीतर विषयवास
नहीं छोड़ें। वह फिर से उठ सकता है। एक-
आगे बढ़ाकर वह अपने लक्ष्य तक पहुँच
जो जीवन की सबसे बड़ी जीत वही होती है जब
ने के बाद खराब होता है। यही साधन
हमें से अपेक्षा करता है और यही धैर्य
के सपनों को वास्तविकता में बदल देता है।

सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि फैलीग्राफ, नार्को-पॉलिग्राफिस और वैन मॉर्गन जैसे परीक्षण व्यक्ति की सहमति के बिना नहीं किए जा सकते। कोर्ट ने इसे निजता के अधिकार और संविधान के अनुच्छेद 20(3) के तहत याचक 'आत्म-दोषारोपण के विरुद्ध अधिकार' का उल्लंघन माना है। इस मौलिक अधिकार का अर्थ है कि किसी भी व्यक्ति को स्वयं के विरुद्ध गवाह बनने या खुद को दोषी ठहराने वाले बयान देने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। कानूनन परीक्षणों के परिणाम सीधे 'साक्ष्य' नहीं माने जा सकते, बल्कि केवल जांच में दिशा देने वाले एक 'सुरंग' के रूप में हैं। इस्तेमाल किया जा सकता है, विशेषकर डिजिटल युग में, जहां व्यक्तिगत डेटा और डिजिटल की निजता पर बड़ा संकट है, नार्को-पॉलिग्राफिस जैसे परीक्षणों को विज्ञान की आड़ में अतिरिक्त प्रयोग करने

लिका को सर्वोपरि जिम्मेदारी यह समय करने का 'अल्गोरिथ्म' दूर नहीं ज 'न्याय' अ तो बता स और कित विवेकपूर्ण उस धाड़ थी या मर

आत्मसंशय हो ज़रू

ने आयोजित जी-7 शिखर सम्मेलन समय पूरी दुनिया की निगाहें टिकी वैश्विक अर्थव्यवस्था, अंतरराष्ट्रीय विकास, व्यापार, जलवायु परिवर्तन, बुद्धिमत्ता, ऊर्जा सुरक्षा और युद्ध प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चाएं अनुक्रम की सात प्रमुख विकासित व्यवस्थाओं का यह मंच एकत्रित हुआ समय में यह प्रश्न स्थायीक रूप बना है कि क्या जी-7 आज भी उतना संगैक और प्राभावाली है, जिसका स्थाना के समय था? क्या वास्तव में वैश्विक समस्याओं के न क मंच बन पाया है अथवा यह वक्तिलशाली देशों के हितों की रक्षा का बन्नकर रह गया है? क्या इस मंच संगैकता एवं उपयोगिता को अमेरिकी देश डोनाल्ड ट्रम्प के अपने स्वस्थों के चलते मे में लगे हैं? विश्व में शांति स्थापना, त आर्थिक विकास और अंतरराष्ट्रीय को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बने वैश्विक संगठनों की फलप्रता का जन उनके परिणामों से होता है, न कि घोषणापत्रों से। दुर्भाग्य से जी-7 के में यह प्रश्न बार-बार उठा रहा है कि निर्णियों और घोषणाओं का वास्तविक फलप्रता है। पिछले वर्षों में रुस-यूक्रेन संघर्षचम पुशिया का संकट, वैश्विक अर्थव्यवस्था, जलवायु परिवर्तन की सीमित प्रभाव, जलवायु

शरीरों को बड़ी बीसी मारना यह है कि वे
 शरीरों के हृदय में लीजें 'शारीरिक'
 मशीनों हैं, जिसका कारण घबराहट
 है ही हो सकती हैं। यह एक
 है, न कि 'दुष्ट डिटेक्टर'
 अतः अपराधी आसानी से अपनी
 को नियंत्रित कर इसे विफल कर
 हैं। वैज्ञानिक और कानूनी दृष्टि से
 का अंतिम पैमाना नहीं हैं; इसके
 अनुप्राय विरोध ही अपराधी के
 वैज्ञानिक संकेतों और व्यावहारिक
 पड़क सकते हैं, जिन्हें छिपाना
 व होता है।

न्याय मंदिर कर विवश करना न्यायिक
 के लिए खतरनाक है। हालांकि
 में एक उपयोगी 'सहायक' हो
 मशीन मशीनें मानवीय संवेदनाओं
 को समझने में आसानी में आसानी
 हैं 'अंतिम निर्णायक' नहीं माना
 न्याय व्यवस्था में सुधार
 मशीन मनोविज्ञान और व्यवहार
 पर अधिक निवेश करने की
 है। जब जांच में मशीनी डेटा के
 मनोवैज्ञानिक का विवेक जुड़ा
 में अधिक विश्वसनीय, तर्कसंगत
 होते हैं।

चूंकि मानवीय प्रणाली को उन्नत
 ही हम न्याय को केवल
 के हदाले कर देंगे, तो वे दिन
 'तथ्य' तो सुरक्षित रहेंगे, लेकिन
 आत्मा खो देगा। एक मशीन
 है कि अपराधी का हृदय कब
 लेते हैं थड़का, लेकिन केवल एक
 प्रत्यक्ष ही यह तथ्य कर सकता है कि
 के पीछे अपराध को ठंडी साजिश
 कर था।

विश्व शांति एवं संतुलन के लिए आत्ममंथन हो जी-7 बैठक में

ने आयोगित जी-7 शिखर सम्मेलन
समय पूरी दुनिया की निगाहें टिकी
वैश्विक अर्थव्यवस्था, अंतरराष्ट्रीय
तन्त्र, व्यापार, जलवायु परिवर्तन,
बुद्धिमत्ता, ऊर्जा सुरक्षा और युद्ध
जनक महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा
और दुनिया की सात प्रमुख विकासित
अर्थव्यवस्थाओं का यह मंच एकत्रित हुआ
समय में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप
से है कि क्या जी-7 आज भी उतना
आर्थिक और प्रभावशाली है, जितना
स्थापना के समय था? क्या यह
वास्तव में वैश्विक समस्याओं के
नाम का मंच बन पाया है अथवा यह
विकासशाली देशों के हितों की रक्षा का
बनकर रह गया है? क्या इस मंच में
योगिता एवं उपयोगिता को अमेरिकी
देश डोनाल्ड ट्रम्प अपने स्वार्थों के चलेते
ने में लगे हैं? विश्व में शांति स्थापना,
तट आर्थिक विकास और अंतरराष्ट्रीय
तन्त्र को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बने
जाए वैश्विक संगठनों की सफलता का
हम उनके परिणामों से होता है, न कि
उन घेरावपूर्ण से। दुर्भाग्य से जी-7 के
समय में यह प्रश्न बार-बार उठता रहा है कि
निर्णयों और घोषणाओं का वास्तविक
प्रभाव क्या है। पिछले वर्षों में रूस-यूक्रेन
विश्वमध्य अस्थिरता का संकेत, वैश्विक
विकास प्रणाली, जलवायु परिवर्तन की
सीमा

ईमान युद्ध ही नहीं, बल्कि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर वैश्विक व्यापार के लिए और बहुपक्षीय संस्थाओं की ओर से लेकर भी मजबूत सामने आते रहे हैं। यह अपेक्षा करना कठिन है कि इन विश्व की जटिल समस्याओं के लिए कोई समन्वय और प्रभावशाली प्रत्युत्तर कर पाएगा। इस सम्मेलन में उभरी उपस्थिति विशेष महत्व रखती है। हमें जी-7 की सदस्यता नहीं, लेकिन बढ़ती आर्थिक शक्ति, वैश्विक विकास और विकासशील देशों के प्रतिनिधित्व में उसे इस मंच का एक महत्वपूर्ण बना दिया है। यह अवसर केवल उपस्थितियों को प्रस्तुत करने का बल्कि उन विकासशील और निम्न-आकांक्षी को मुखर करने का भी है। उनकी आवाज अक्सर वैश्विक निर्णयों में दब जाती है।

चीनी, एशिया और लैटिन अमेरिका के देश आर्थिक संकट, छाद्य जलवायु आन्दोलन और ऋण के जुझ रहे हैं। उनकी प्राथमिकताएँ भारत की प्राथमिकताओं से भिन्न हैं। भारत को यह प्रत्युत्तर उठाना चाहिए कि विश्व की दिशा तय करने के केवल कुछ विकसित देशों तक नहीं रहना चाहिए। वास्तविक शासन को अधिक लोकतांत्रिक, समन्वय

PRGI NO. GJHN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat, India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747, 7096333307
Email: navsarjansanskriti2016@gmail.com*navsarjansanskriti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskriti.com

